# होली

होली का त्यौहार भारत के मुख्य त्यौहारों में से है। परन्तु आज इस त्यौहार का रूप अपने आदिम रूप से बिल्कुल ही बदला हुआ है। वास्तव में यह एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक त्यौहार था परन्तु आज इसे मनाते समय ज्ञान— ध्यान को एक तरफ रखकर हुल्लड़बाज़ी को ही प्रधानता दी जाती है जिसे देखकर बहुत—से शिष्ट लोगों के मन में इस त्यौहार के प्रति घृणा पैदा हो गई है। अत: आवश्यकता है कि हम होली के आध्यात्मिक रहस्यों को जानें क्योंकि इनको जानने से मनुष्य को जीवन— मार्ग की दिशा मिल सकती है।

## होली के आध्यात्मिक रहस्य

होली का त्यौहार शिवरात्रि के बाद, फाल्गुन पूख्रणमा के दिन आता है और लोग इसे प्राय: चार प्रकार से मनाते हैं। १— वे एक— दूसरे पर रंग डालते हैं, (२) अन्तिम दिन होलिका जलाते हैं (३) मंगल मिलन मनाते हैं और (४) कई लोग झूले में श्रीकृष्ण (श्री नारायण) की झांकी भी सजाते हैं। होली को मनाने की तिथि और उपर्युक्त चार रीतियों पर ध्यान देने से होली के वास्तविक रहस्यों को सहज ही समझा जा सकता है।

भारत में, देशी वर्ष फाल्गुन की पूर्णमाशी को समाप्त होता है। इसलिए, फाल्गुन की पूर्णमाशी की रात्रि को होलिका जलाने का अर्थ पिछले वर्ष की कटु और तीखी स्मृतियों को जलाना, अपने दु:खों को भूलना और हँसते— खेलते नये वर्ष का आह्वान करना है। अत: उत्तरप्रदेश में कई लोग 'होलिका दहन' को 'संवत जलाना' भी कहते हैं। इसके अतिरिक्त, पुराने वर्ष के अन्त में इस त्यौहार का मनाया जाना वृहद् दृष्टि में इस रहस्य का भी परिचय देता है कि यह त्यौहार पहले— पहले कल्प अथवा कलियुग के अन्त में मनाया गया था जिसके बाद सतयुग के सुख— शान्ति के दिन शुरू हुए थे। कलियुग के अन्त में होलिका जलाने से मनुष्य का दु:ख, दरिद्रता और वासना तथा व्यथा सब दूर हो गये थे। परन्तु प्रश्न उठता है कि होलिका जलाने से मनुष्य के विकार और विकर्म तथा दु:ख और क्लेश भला कैसे नाश हो सकते हैं?

स्पष्ट है कि लकड़ियाँ तथा गोबर जलाना ही 'होलिका दहन' नह° है बल्कि दिनोदिन इनमें वृद्धि ही हो रही है। अत: विचार करने पर आप मानेंगे कि योगाग्नि प्रज्जवलित करने से ही हमारी पुरानी कटु स्मृतियाँ मिट सकती हो, हमारे दु:ख दूर हो सकते हो और आने वाले नये वर्ष में हमारे जीवन में आनंद और उल्लास आ सकता है। इसलिए होलिका के दिन गोबर और घास—फूस को अग्नि की ज्वाला में जलाना वास्तव में मन की ऊबड़—खाबड़ अथवा दूषित वृत्तियों को योगाग्नि द्वारा भस्मसात करने की प्रेरणा देता है। इसी कारण इस त्यौहार को कई लोग 'राक्षस विनाशक त्यौहार' भी मानते हैं क्योंकि यह माया रूपी राक्षसी को ज्ञान रूपी हो— हल्ले से भगाने का त्यौहार है।

## 'होलका' शब्द का अर्थ

कई लोगों का कहना है कि 'होलका' शब्द का अर्थ है — 'भुना हुआ अन्न'। होलिका के अवसर पर लोग अग्नि में अन्न डालते हैं और गेहूँ और जौ की बालों को भूनते हैं। योगियों की बोल— चाल में ज्ञान अथवा योग को अग्नि से उपमा दी जाती है क्योंकि, जैसे भुना हुआ बीज आगे उत्पत्ति नहीं कर सकता वैसे ही ज्ञान— युक्त और योग—युक्त अवस्था में किया गया कर्म भी अकर्म हो जाता है, अर्थात् वह इस लोक में विकारी मनुष्यों के संग में फल नहीं देता। अत: 'होलका' शब्द भी हमें इस बात की स्मृति दिलाता है कि परमपिता ने पुरानी सृष्टि के अन्त में मनुष्यों को ज्ञान—योग रूपी अग्नि द्वारा कर्म रूपी बीज को भूनने की जो सम्मति दी थी, हम उस पर आचरण करें। चन्द लकड़ियों और उपलों को इकट्ठा करके जलाने को ही हम होली न मान लें बल्कि योगाग्नि में अपने पुराने एवं खराब संस्कारों को दग्ध करें और आगे के लिए कर्मों को ज्ञान— युक्त होकर करें।

## होली पर रंग

होली के अवसर पर एक—दूसरे पर रंग डालने की प्रथा भी इसी भाव को व्यक्त करते है। जैसे ज्ञान के अन्य अनेक नाम 'अंजन, अमृत, अग्नि' इत्यादि हैं, वैसे ही ज्ञान को 'रंग' भी कहा गया है। ज्ञानी मनुष्य अपने संग से दूसरों पर भी ज्ञान का रंग चढ़ाता है, उनकी आत्मा रूपी चोली को भी परमात्मा की लाली में लाल करता है। जब तक मनुष्य स्वयं

भी ज्ञान में न रंगा जाये और दूसरों पर भी ज्ञान—वर्षा न करें तब तक वह आनन्दित तथा प्रफुल्लित नहीं हो सकता और तब तक परमात्मा से उसका मंगल मिलन भी नह० हो सकता। अत: आज एक—दूसरे पर रंग डालने तथा छोटे— बड़े, परिचित— अपरिचित सभी से प्रेम भाव से मिलने की जो रीति है, इसका शुरू में यही रूप था कि परमपिता परमात्मा शिव से ज्ञान प्राप्त करके मनुष्यों ने ज्ञान— पिचकारी से एक— दूसरे की आत्मा रूपी चोली को रंगा था और एक— दूसरे के प्रति मन— मुटाव तथा मलीन भाव त्याग कर मंगलकारी परमात्मा शिव से मंगल मिलन मनाया था। ज्ञान के बिना मनुष्य भला मंगल— मिलन मना ही कैसे सकता है? अज्ञानी और मायावी मनुष्य तो अपने काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि राक्षसी स्वभावों से दूसरों का अमंगल करता है, उनके अधोपतन का निमित्त कारण बनता है, वह मंगल— मिलन तो तभी मना सकता है जब ज्ञान— अबीर में आत्मा को रंगे और पुराने विचारों, आचारों और समाचारों को तथा मनोविकारों को योग की अग्नि का इंधन बना दे।

## झूले में श्रीकृष्ण जी की झांकी

ऊपर बताई गई रीति से होली मनाने से ही मनुष्य को श्रीकृष्ण जी की झांकी दिखाई देगी। आजकल होली के उत्सव पर वैष्णव लोग झूले में श्रीकृष्ण (श्री नारायण) की झांकी सजाकर उसके दर्शन मात्र को ही पर्याप्त समझते हैं। उनका यह विश्वास है कि — ''इस दिन जो व्यक्ति झूले में झूलते हुए श्रीकृष्ण जी के दर्शन करता है, वह वैकुण्ठ में देव— पद का भागी बनता है। वह वैकुण्ठ में भी श्रीकृष्ण जी का सानिध्य प्राप्त करता है अथवा वहाँ भी उसे उनके साथ झूलने का सौभाग्य प्राप्त होता है।'' परन्तु विचार कीजिए कि श्रीकृष्ण तो पूर्ण पावन हैं और आज का मनुष्य पूर्ण रूप से पतित है, तो अब दर्शन मात्र से वैकुण्ठ में दोनों का इकट्ठा निवास कैसे हो सकता है? इस प्रकार के दर्शन— मात्र से आज तक कितने मनुष्यों को वैकुण्ठ का सुख मिला है?

वास्तव में 'दर्शन' का अर्थ 'ज्ञान' अथवा पहचान ;चीपसवेवचीलद्ध है। अत: श्रीकृष्ण जी के दर्शन का मतलब है — 'श्रीकृष्ण जी की जीवन— कहानी का वास्तविक ज्ञान।' जो मनुष्य स्वयं को ज्ञान के रंग में रंगता है और सच्चा वैष्णव (सम्पूर्ण अहिंसक) बनता है, उसे तो वैकुण्ठ में

झूलते हुए श्रीकृष्ण दर्शन होते ही हैं। उसकी आँख तो इस कलियुगी दुनिया से हट जाती है और वैकुण्ठ पर ही लगी रहती है। वह तो इस दुनिया में रहते हुए भी मानो नह° रहता बल्कि वैकुण्ठ में श्रीकृष्ण को झूलता देखता है। इतना ही नह° वह तो स्वयं भी ज्ञान— आनन्द के झूले में झूलता है, जो एक बार उस झूले में झूलता है, उसे विषय— विकार फिर अपनी ओर आकखषत नह° करते। उसके लिए होली का उत्सव 'मल— उत्सव' नह° है, मंथन (ज्ञान—मंथन) उत्सव है।

## गीता के भगवान की होली

भारत ही एक ऐसा देश है जहां के त्यौहार जैसे कि शिवरात्रि इत्यादि या तो ईश्वर के चरित्रों के साथ सम्बन्धित है या देवताओं के जीवन के साथ सम्बन्ध रखते हैं, जैसे कि दीवाली इत्यादि। अत: भारत के त्यौहारों का पूरा परिचय तभी हो सकता है जब कि परमात्मा के निराकार और साकार स्वरूप का, उसके अलौकिक चरित्रों के समय का, और देवताई सृष्टि स्थपित करने की अलौकिक रीति का परिचय हो भारतीय त्यौहारों का परमात्मा और देवताओं के साथ जो सम्बन्ध है और उनके पीछे जो आध्यात्मिक रहस्य है, उनका बोध हुए बिना इन त्यौहारों के मनाने का पूरा लाभ भी नही हो सकता यही बात होली के विषय में भी कही जा सकती है।

गीता के भगवान ने गोप— गोपिंयों से होली मनायी थी इस वृतान्त के चित्र भारतवासी अपने घरों में प्रेम से लगाते है और स्वयं भी उस दृष्टि से हर वर्ष होली मनाना चाहते है प्रश्न यह उठता है कि क्या गीता के भगवान ने ऐसी होली मनायी थी? विचार कीजिये कि भगवान का तो हर एक कृत्य अलौकिक चरित्रात्मक और आदर्शपूर्ण होता है। भगवान का तो हर एक कर्म बड़ा शिक्षाप्रद कल्याणकारी, रमणीय, आकर्षक, प्यार और सप्रयोजन होता है क्या आज जिस प्रकार लोग एक दूसरे के गले में जूतों के हार डालते मिट्टी के तेल में रंग घोल— घोल कर एक दूसरे का मुह काला करते हैं, होली खेलने की इस रीति को अलौकिक अथवा ईश्वरीय रीति कहा जा सकता है? होली के दिनों में एक दूसरों पर आवाजें कसना, बडे— छोटे का अदब गंवा देना सभी दिव्य गुणों को भुला कर हुल्लड़ मचाना और स्थान— स्थान पर दंगा करना, क्या यही आदि सनातन

होली है जो गीता ज्ञान धारण करने वाले गोप गोपियों ने ज्ञानस्वरूप, प्रेमस्वरूप सर्वगुण सम्पन्न निराकार परमात्मा, अर्थात गीता के भगवान ने साकार रूप से की थी या होली खेलने की वह रीति कुछ और थी ?

## होली के दो पहलू

आज भारतवासी होली को दो तरह से मनाते हैं। होलगी के दिनों में एक तो एक— दूसरे पर रंग डालते हैं और दूसरा अन्तिम दिन वे होलिका को जलाते हैं इसलिए होली को यथार्थ रिति मनाने के लिए इन दोनों रिवाजों को जानना अवश्यक है।

## ढोलियों में रंग

वास्तव में गीता के भगवान ने तो ज्ञान— गुलाल से अथवा विज्ञान (योग) केसर से ही गोप— गोपियों की आत्माओं को रंग डाला था अथवा पवित्रता रूपी गुलाब जल से ही उनके अंग— अंग को शीतल हर एक का कृत्य था ही ज्ञाननिष्ठ और दिव्यगुण सम्पन्न सृष्टि की स्थापना के लिये। परन्तु बाद में जैसे उसकी रसीली ज्ञान मुरली (जिस द्वारा गोप— गोपियों ने अतीन्द्रिय सुख पाया था, न कि इन्द्रिय) को चित्रकारों ने चित्रों में रत्न जड़ित मुरली का रूप दिया है, वस्त्र ही उनके ज्ञान गुलाल और योग केसर ( जिस अलौकिक रंग से ही भगवान ने गोप— गोपियों को आध्यात्म में रंग दिया था जिसकी याद में आज भी लोग स्थूल रंग खेलते और स्थूल रीति से होली मनाते हैं।

इस प्रथा का शुरू में जो आध्यात्म रूप था, वह इस प्रकार था। धर्म सम्पन्न सतयुगीय देव सृष्टि स्थापन करने वाले गीता के भगवान ने जिन गोप— गोपियों को ज्ञान और योग के रंग में रंगा था, उन्हें ही उन्होंने आज्ञा की थी कि हे..... वत्सों जाओं अब दूसरों की चोली भी इस ज्ञान रंग से रंग दो । सारी सृष्टि में कोई भी मनुष्यात्मा इस रंग छींटों से अछूती न रहे

आज स्थूल रंग लगाने के लिए जबरदस्ती की जाती है। उससे तो बहुत हानि होती है और परस्पर दंगे हो जाते हैं। परन्तु यदि इसी होली को फिर अपने वास्तविक ज्ञानमय रूप में बदल दिया जाये ताकि होली

का ही नही, भारत का ही नही, बल्कि संसार का चित्र— चरित्र एकदम बदल जाये।

## मंगल मिलन

होली के दिन, जान पहचान वाले लोग, आपस में मिलते हैं एक दूसरे पर रंग डालते हैं और परस्पर छाती से लबते हैं। जो दो मनुष्य होली से पूर्व लडे हुए हों वह भी होली के दिन एक दूसरे पर रंग घोलकर लगाया जाता है। इसका अर्थ जनता यह लेती है कि इस मिलन के समय से लेकर दोनों मिलने वाले अपनी पिछली शत्रुता, ईर्ष्षा, द्वेष आदि को भूल कर परस्पर प्यार करने लगेंगे। परन्तु साधारण विचार की बात है कि मन के भीतर की अशुद्ध वृत्तियों, ईर्ष्षा, द्वेष इत्यादि आत्मा को ज्ञान में रंगे बिना तो मिटा ही नही सकती जब तक मनुष्यात्मा का कल्याणकारी परमपिता परमात्मा (शिव) से मिलन न हो तब तक आपस में भी मनुष्यों का मंगल मिलन नहीं हो सकता।

## होलिका जलाना

होली के दिन अड़ोसी— पडोसी इकठ्ठे होकर एक बहुत बड़े ओपलों के ढेर में, जिसे वे होलिका मानते हैं, आग लगाते हैं। लोग मानते हैं कि इस दिन प्रहलाद ( जो स्वयं को ईस्वर की सन्तान निश्चय करता था ) को जलाने के लिये जब हिरण्यकश्यप (जो स्वयं को भगवान कहलवाना चाहता था) की बहन 'होलिका' प्रहलाद को अपनी गोद में लेकर आग के ढेर पर बैठी उसे यह निश्चय था कि वह सुरक्षित ही बाहर निकल जायेगी और प्रहलाद जल जायेगा। परन्तु हुआ उसके विपरीत ही। अर्थात होलिका जल गयी और प्रहलाद बच निकला इसी खुशी में लोग आज तक होलिका जलाते आते हैं, परन्तु इस आध्यात्मिक रूपक के वास्तविक रहस्य को जीवन में नहीं लाते। यधपि होलिका जलाने की परम्परा इस तथ्य से की कि एक अकेला बालक भी एक ईश्वर ही का सहारा लेने पर अनेक परीक्षाओं को पार करते हुए विजयी होता है और सुरक्षित रहता है और स्वयं को ईश्वर निश्चय करने वालों तथा रिद्धि— सिद्धि पर अभिमान करने वालों ही का सर्वनाश होता है। की सृष्टि कर्ता है किन्तु आश्चर्य है कि भारतवासी प्रति वर्ष होलिका तो जलाते हैं किन्तु न आज परमात्मा को जानते, न मानते और न ही उसकी शरण

लेते हैं ।

## सच्ची होली मनाना

इसलिये आज आवश्यकता इस बात की है कि फिर गीता ज्ञान से अपना चोला रंगा जाय और ज्ञान केसर की सुमंगल मिलन किया जाय और स्वयं परमपिता परमात्मा शिव की सन्तान निश्चय कर ईस्वर की याद में रहने के पुरुषार्थ में जो बाधायें आयें उनको एक बल, एक भरोसे के आधार पर पार किया जाये।

अब ईश्वरीय ज्ञान तो स्वयं ईस्वर ही देते हैं अत: वर्तमान समय गीता के भगवान जो गीता ज्ञान हमें दे रहे हैं उसको धारण करके सच्ची होली मनानी चाहिये, उससे ही गोप– गोपियों की भांति अतीन्द्रिय सुख प्राप्त हो सकेगा ।

**- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स**
www.bkvarta.com